ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.01 October 2021

आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासों में आँचलिकता

डॉ.टीकम चन्द मीना B–1, हेमा रेजीडेंसी, करौंदी,बीएचयू,वाराणसी (उ.प्र.) 221005

शोध सारांश :

आँचलिक उपन्यासकार 'अँचल' को केन्द्र में रखकर पात्रों के संवादों का ढाँचा तैयार करता है वहाँ आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासकार आदिवासी जीवन को केन्द्र में रखता है। 'अँचल' व्यापक शब्द है। उसकी व्यापकता ने आदिवासी समाज जीवन को भी अपने में समेट लिया है। आदिवासी समाज जीवन पर लिखे गये उपन्यास भी आंचलिक उपन्यासों की परिधि में आते हैं, किन्तु आँचलिक उपन्यासों की परिधि में होते हुए भी दोनों में तात्त्विक भेद है। गाँव, जंगल, बंजर इलाका, नदी, तालाब के तट पर एवम् रास्तों की दाएँ–बाएँ बसने वाले जो भी हैं उन्हें अँचल में बसते हैं कहा जाता है। किन्तु वे बसने वाले किस जाति के हैं? इस आधार पर हम दोनों प्रकार के उपन्यासों को अलग करते हैं। आदिवासी जीवन–संबंधी उपन्यासों से हम कोई अजाने क्षेत्र, अजानी भाषा एवं अजानी संस्कृति से परिचित होते हैं।

शब्द कुंजी :

आँचलिक, आदिवासी, उपन्यास, कथा, विविधता, आधिकार, अनुभूति, विश्वसनीयता, विसंगति, भाषा, प्रभावशाली, जीवंतता।

प्रस्तवना :

आँचलिक उपन्यासों की कथावस्तु परम्परागत वस्तु योजना की व्यापकता में, आधिकारिक–कथा, प्रासंगिक कथा एवं अन्य उपकथाओं का संयोजन कथानक के आवश्यक उपादन के रूप में नहीं होता और न ही उनसे कथानक के विभाजन का कोई आधार प्राप्त होता है। वे तो मात्र आँचलिक जन–जीवन का चित्रण प्रस्तुत करती हैं, क्योंकि इन उपन्यासों में मानवीय कथाओं को केन्द्रीयता नहीं प्रदान की जाती। जन जीवन को उजागर करने में कोई एक कथा अन्यों की तुलना में प्रभावक हो सकती है लेकिन सभी का महत्त्व समान ओर लक्ष्य आंचलिक जन–जीवन का समग्र अंकन होता है। मनुष्य की सामान्य जिन्दगी और उसके परिवेश की समस्त जटिलताओं, संपूर्ण विसंगतियों एवं समग्र वास्तविकताओं को उद्घाटित करने वाले आँचलिक उपन्यासों का अपना एक नवीन कथा–विन्यास है। इस नवीन कथा–विन्यास में न तो अनुभूतियों का आयात होता है, न कल्पना की वैभवपूर्ण उड़ान और न सिकी मतवाद का जबरन आरोपण। इन उपन्यास में वही सब कुछ हमारे रोज–मर्रा के अनुभव, जाने पहचाने लोग परिवेश की हलचलें तथा हमारा देखा, भोगा और महसूस किया जीवन होता है जो एक विशेष दृष्टि से संयोजित होता है। इस संयोजन में छोटी बड़ी घटनाएँ, प्रसंग और स्थितियाँ सब मिलकर वास्तविकताओं का उद्घाटन बड़ी विश्वसनीयता से होता है, जो हमारे भीतर जीवन का सच्चा और गहरा अहसास कराती हैं।

''आंचलिक उपन्यासों में अंचल अपने सम्पूर्ण विविधता और समग्रता के साथ नायक होता है। अँचल के जीवन की सारी परम्पराओं, ऐतिहासिक प्रगतियों, शक्तियों–अशक्तियों, छवियों–अछवियों को जितनी ही अधिक

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.01 October 2021

सच्चाई से लेखक पकड़ सकेगा, अँचल जीवन के चित्रण में वह उतना ही सफल होगा,।'' आदिवासी जीवन–संबंधी उपन्यासकारों के लिए भी यही बात उतनी ही महत्त्वपूर्ण होती है, किन्तु वे अँचल की बजाय वहाँ उसे हुए आदिवासियों के जीवन की लय हो पहचानते हैं। उनकी वेश–भूषा, उनकी भाषा, उनका रहन–सहन, उनके आचार–विचार, उनके जातीय संगठन, उनके देवी–देवता, उनका स्वातन्त्र्य प्रेम, उनके सहज आत्मकेन्द्रित मुक्त जीवन और उससे निर्मित मानसिकता का अच्छी तरह अध्ययन करके उपन्यास की रचना की जाती है।

आँचलिक उपन्यास की छोटी–बड़ी कथाओं के महत्त्व के संदर्भ में डॉ0 आदर्श सक्सेना ने ठीक ही कहा है, ''आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु में आधिकारिक–कथा केवल अँचल विशेष के जन–जीवन निरूपण की होती है, कोई मानवीय कथा केन्द्रीय कथा नहीं हो पाती हो कोई एक कथा अन्य कथाओं की तुलना में अधिक प्रभावशाली हो छोटे–बड़े पुर्जों का मशीन के निर्माण में। आँचलिक उपन्यासों में कई बार कोई मानवीय कथा आधिकारिक कथा होने का आभास देने लगती है। ऐसा प्रायः पात्र विशेष के प्रखर व्यक्तित्व का या पात्र विशेष के भावात्मक चित्रण के कारण होता है। इन दोनों स्थितियों में कोई एक कथा अन्य कथाओं की तुलना में प्रमुखता पा लेती है। लेकिन अंततः वर्चस्व अँचल और उसकी कथा का ही रहता है। कभी–कभी आँचलिक उपन्यासों में प्रमुखता अँचल की नहीं, बल्कि जाति विशेष की होती है। इस कोटि के उपन्यासों का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूँ' उपन्यास है। ''प्रथम वह जाति विशेष के जीवन का उद्‌घाटित करने वाला है। (अँचल को नहीं)। द्वितीय उसकी शैली आत्मकथात्मक है। अतः वह चरित्र–प्रधान होने का निश्चिय आभास देता है। परन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है। सुखराम के चरित्र क के समकक्ष ही प्यारी, कजरी और रूस्तम खाँ के चरित्र भी प्रभावशाली ढंग से उद्‌घाटित हुए है।

आँचलिक उपन्यासों की तरह जन जातीय जीवन–संबंधी उपन्यासों में भी वन्य जीवन को उसकी समग्रता में रूपायित करने के लिए आदिवासी जीवन के विविध पक्षों को उद्‌घाटित करने वाले विभिन्न वर्गों, विविध स्वभावों और भिन्न–भिन्न स्तर के पात्रों की योजना करनी पड़ती है। कुछ पात्र वन्य जीवन की आर्थिक समस्या से जुड़े होते हैं तो कुछ नैतिक धार्मिक और सांस्कृतिक पक्षों से कुछ पात्र वन्य जाति की जीवंतता के प्रतीक बनकर आते हैं तो कुछ वर्तमान टूटन, घुटन और कुंठाओं के, तो कुछ वन्य जीवन में व्याप्त यौन, भ्रष्टाचार और रूढ़िवादी परंपराओं के पोषक। अतः इन उपन्यासों में पात्रों की बहु संख्यकता एक अनिवार्यता है।

आदिवासी जीवन स्वयं विशिष्ट होने के कारण उसमें भी विशिष्टता का समावेश स्वतः ही हो जाता है। यह वैशिष्ट्य सभी प्रकार के पात्रों में समान रूप से मुखर नहीं होता। इसके अपने स्तर होते हैं। अथवा यों कहें कि आदिवासी विशिष्टता उच्चवर्ग के पात्रों में न्यूनतम, मध्यम वर्ग के पात्रों में थोड़ी बहुत और निम्नवर्ग के पात्रों में पूर्ण रूप से प्रकट होती है।

आँचलिक उपन्यासों में न कोई नायक होता है और न कोई खलनायक। परिवेश की मिट्टी से गढ़े हुए पात्र लेखकीय आवश्यकता का निर्वाह करने आते हैं। और चले जाते हैं। कोई पात्र आदि से अन्त तक आवश्यक है तो कोई पात्र कुछ क्षण ही। समय की अवधि उन्हें विशिष्ट और सामान्य में कहीं बाँटती। विभिष्ट भू भाग का व्यक्तित्व निर्माण ही इनका लक्ष्य होता है और उसी को चित्रित करने के लिए विभिन्न छोटे–बड़े पात्रों का नियोजन होता है। वहाँ पर आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यासों में व्यक्ति के स्थान पर पूरे जातीय जीवन को

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.01 October 2021

महत्त्व दिया जाता है। परिणामस्वरूप पात्रों का जो स्वाभाविक एवं आदर्श से निर्मित चरित्रांकन होना चाहिए वह नहीं होता। आँचलिक उपन्यासों की पात्र सृष्टि पर शहर एवं राजनीतिक का थोड़ा स्पर्श दृष्टिगत होता है किन्तु आदिवासी जीवन–संबंधी उपन्यास उससे बिल्कुल अछूता होता है। 'मैला आँचल' (रेणु) का बालदेव गोप है। गाँधीजी के विचारों से प्रभावित होकर वह नेता बन जाता है और बड़ी सरलता से मध्यम वर्ग प्राप्त कर लेता है वहाँ 'जंगल के फल' का सुलकसाए गोंड़ आदिवासी जीवन को सुरक्षित रखने हेतु सरकारी कर्मचारी एवं राजनेताओं का विरोध करता है। शहर के साथ जुड़ना आदिवासी जीवन को खत्म करना समझता है। जो भी हो किन्तु एक बात स्पष्ट रूप में आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यासों में दृष्टिगत होती है कि जो भी पात्र प्रस्तुत होते हैं वे सारे के सारे पात्र अपनी प्रकृति के बचाव का प्रयत्न करते हैं। जंगल को बचाने हेतु अत्याचार सहते हैं। अत्याचारों का प्रतिरोध नहीं करते। 'जंगल के फूल' उपन्यास का नायक सुलकसाये महुआ का प्रेमी है। वह आदिवासियों की संस्था घोटुल से अधिक प्यार करता है। इसका यह प्यार उसके आत्मकथन से स्पष्ट होता है। वह कहता है– ''इसका प्रेम मेरी जिन्दगी है।'' महुआ और सुलकसाये के वार्तालाप से सुलकसाये के व्यक्तित्व के अनेक पहलू उजागर हुए हैं। जैसे प्रकृति प्रेम, देशप्रेम, जातिगत प्रेम, महुआ से एक निष्ट प्रेम तथा निस्वार्थ भाव। यही बात शायद आँचलिक उपन्यासों में आंशिक रूप ('जंगल के फूल' राजेन्द्र अवस्थी) से दृष्टिगत होती है।

आँचलिक उपन्यासकार 'अँचल' को केन्द्र में रखकर पात्रों के संवादों का ढाँचा तैयार करता है वहाँ आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासकार आदिवासी जीवन को केन्द्र में रखता है। 'अँचल' व्यापक शब्द है। उसकी व्यापकता ने आदिवासी समाज जीवन को भी अपने में समेट लिया है। आदिवासी समाज जीवन पर लिखे गये उपन्यास भी आंचलिक उपन्यासों की परिधि में आते हैं, किन्तु आँचलिक उपन्यासों की परिधि में होते हुए भी दोनों में तात्त्विक भेद है। गाँव, जंगल, बंजर इलाका, नदी, तालाब के तट पर एवम् रास्तों की दाएँ–बाएँ बसने वाले जो भी हैं उन्हें अँचल में बसते हैं कहा जाता है। किन्तु वे बसने वाले किस जाति के हैं? इस आधार पर हम दोनों प्रकार के उपन्यासों को अलग करते हैं। आदिवासी जीवन–संबंधी उपन्यासों से हम कोई अजाने क्षेत्र, अजानी भाषा एवं अजानी संस्कृति से परिचित होते हैं। आँचलिक उपन्यास साहित्य में संवाद योजना जानी पहचानी होती है, वहाँ आदिवासी समाज–जीवन–संबंधी उपन्यासों की संवाद–योजना अनजान होती है। वीरेन्द्र जैन रचित 'पार' उपन्यास में जो संवाद योजना है कहीं–न–कहीं पाठक के लिए जटिल साबित होती है–

उदा. : मुखिया गजब हो गया।का भयो। गाज गिर गई का ?

''आँ हाँ। लड़ैई के मवेशी अपने खेरे की डाँग में पिड़ आए।''

''गैल हिरा गए हुइंए।''

''कैसी बातें करते हो मुखिया। ढोर–बछेरू अपनी जानी–चिनहारी

गैल हिरा जेंहे?''

''तो क्या कोई हाँक लाया इन्हें?''

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.01 October 2021

मुखिया ने एक बार सामने एक किनारे से दूसरे किनारे तक नजर दौड़ाई। खेरे के सब जन सामने मौजूद पाए तब थोड़ी सी निश्चितता आई। ''लगत तो ऐसोई है। पर वह जन अपने खेरे को नइयां।'''जब अपने खेरे का नहीं तो तुम सब बेफिक्र रहो। कोई लाग डाँट में हाँक लाया होगा। अभी गाँव से बरेदी कि कोई और आकर वापस ले जाएगा।''

आँचलिक उपन्यासों की तरह आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासों के संवादों में भी भावात्मकता का गुण दृष्टिगत होता है। राजेन्द्र अवस्थी के 'जंगल के फूल' उपन्यास में प्यार की गहराइयों में खोये हुए दो पात्रों का संवाद जीवन भर एक दूसरे का साथ निभाने का भास करवाता है। यथा–

''सुलक।''

''हा महुआ।''

''तू पागल हो गया है?''

''हा महुआ।''

''आज नेतानार से माँझी आने वाला है?'''हा महुआ।''

''तू क्या कहेगा, तूने सोचा है, न सोचने की जरूरत समझता हूँ।''

''क्यों?'''तब तक जिन्दा नहीं रहूँगा।''

उपन्यास की संरचना में परिवेश का विधान अत्यंत महत्वपूर्ण ही नहीं अपितु अपरिहार्य तत्व है। और फिर आँचलिक उपन्यास तो सही मायनों में परिवेश की ही कथा है। आँचलिक उपन्यासों के परिवेश पर विचार करने पर एक बात बहुत स्पष्ट रूप में उभर कर सामने आती है कि इन उपन्यासों में परिवेश की अवधारणा न तो अमूर्त है और न ही आकार की तरह व्यापक। ये उपन्यासकार अँचल विशेष के जीवन को उसकी समग्रता के साथ प्रस्तुत करने के लिए उस अंचल के सीमित परिवेश को ही पकड़ने की चेष्टा करते हैं। वहाँ आदिवासी समाज जीवन से संबंधित उपन्यासकार अँचल के सीमित परिवेश को न पकड़कर किसी अछूते अँचलमें बसने वाली आदिवासी जाति को अपने उपन्यास की कथा का आधार बनाते हैं। फणीश्वर नाथ 'रेणु' का 'मैला आँचल' आंचलिक उपन्यासों की कला का नापदंड है। प्रस्तुत उपन्यास में पूर्णिया जिले के एक गाँव मेरी गंज (जो अत्यधिक पिछड़ा हुआ है) की मैली–जिन्दगी का दस्तावेज है। यह जिन्दगी आम पाठक से दूर नहीं है। कहीं न कहीं देखी या भोगी हुई होती है। किन्तु आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासों की कथा भूमि अनजान क्षेत्र से, अनजान जाति से निर्मित होती है। आम पाठक से दूर बसा अंचल या जाति प्रस्तुत उपन्यास की कथाभूमि बनती है। उदाहरण राजेन्द्र अवस्थी द्वारा लिखा गया 'जंगल के फूल' बस्तर के आदिवासियों के जीवन को केन्द्र में रखकर लिखा गया आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यास है। लेखक ने वहाँ बसने वाली गोंड़ जाति को अपनी कथा रचना का आधार बनाया है। बस्तर की गोंड़ जाति आज भी आधुनिक सभ्यता से अलग अपने वनों–घाटियों, नदी–नालों, पशुओं–पक्षियों देवी–देवताओं तथा रूढ़ियों और संस्कारों से जुड़ी हुई आदिम संस्कृति में जी रही है। वे शहरों से अपना संपर्क बनाना नहीं चाहत है।

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.01 October 2021

'जंगल के फूल' (राजेन्द्र अवस्थी) आंचलिकता की बजाय जातिगत संवेदना को मुखरित करने वाला उपन्यास है। राजेन्द्र अवस्थी ऐस रचनाकार हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में परिवेश को प्रधानता न देकर जाति को दिया है। जिस भूमि में वे पले, जिस भूमि से उनका सम्पर्क रहा उसी का चित्रण करना उनका अभीष्ट अंग हो रहा है। अवस्थी जी ने आदिवासी जीवन संबंधी तीन उपन्यास लिखे। 'जाने कितनी आँखे' उपन्यास में बुन्देलखण्ड के बीजाडांडी के गाँव को चित्रित किया है। 'जंगल के फूल' में बस्तर क्षेत्र के गढ़बंगाल, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, नेतानार तथा चितरकोट आदि गाँवों के आदिवासियों का जन–जीवन चित्रित है और 'सूरज किरण की छाँव' में चेतना, तामिया तथा चितरकोट के आदिवासियों के जीवन का यथार्थ चित्रण है।

अब दूसरे छोर के आंचलिक उपन्यासों की भाषा पर विचार किया जाय। फणीश्व नाथ 'रेणु' के उपन्यासों, विशेषकर 'मैला आँचल' की भाषा ने आलोचकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। सम्बद्ध क्षेत्र के साथ–साथ बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के पाठकों को जो चमत्कार इसमें प्राप्त होता है। वह अवर्णनीय है। भाषा के कारण 'रेणु' के सारे पात्र सजीव हो उठे हैं। किन्तु यह सजीवता हिन्दी के दूरस्थ क्षेत्र एंव अहिन्दी भाषी पाठकों के लिए भी उतनी ही मात्रा में होगी, इसमें संदेह है। 'रेणु' की भाषा के संदर्भ में होती रही हैं। 'रेणु' की भाषा के संदर्भ में डॉ0 रामदरश मिश्र ने लिखी है–''आंचलिक उपन्यासों की भाषा के संबंध में भी चर्चाएँ होती रही हैं। 'रेणु' ने 'मैला आँचल' में स्थानीय बोली का काफी पुट दिया है। वाक्य के वाक्य स्थानीय भाषा के हैं। यहाँ सैद्धान्तिक प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या इस प्रकार का भाषा प्रयोग फैशन है या सर्जन की अनिवार्यता? मैं मानता हूँ कि यह सर्जन की अनिवार्य मांग है, दो तरह से एक तो स्थान विशेष का वातावरण चित्रित करने के लिए दूसरे वहाँ के जीवन की जीवंतता और उसकी मूल सहजता के साथ अंकित करने के लिए। भाषा उपर से ओढ़ी हुई चीज नहीं होती, वह स्थान विशेष के लोगों के संस्कारों और अनुभूति के साथ अनिवार्य भाव से संपृक्त होती है।

तीसरी कोटी के उपन्यासकारों में शिवपूजन सहाय रामदरश मिश्र और नागार्जुन का नाम लिया जाता है। शिवपूजन सहाय को भाषिक संवेदना कहीं 'रेणु' से बढ़ी–चढ़ी है। उनके साहित्य की भाषा में परिनिष्ठतता दिखाई देती है। वस्तुतः आधुनिक युग में वे मानक हिन्दी गद्य के निर्माताओं में से थे। 'देहाती दुनिया' के प्रथम संस्करण की भूमिका में उन्होंने लिखा था– 'बात ऐसी हुई कि मैंने आज तक जितनी पुस्तकें लिखी, उनकी भाषा अत्यन्त कृत्रिम, जटिल, आडम्बपूर्ण अस्वाभाविक और अलंकार युक्त हो गई। उनसे मेरे शिक्षित मित्रों को तो संतोष हुआ, पर मेरे देहाती मित्रों का मनोरंजन कुछ भी न हुआ किन्तु इसे लिखकर भी मेरे मन को अभी पूरा संतोष नहीं हुआ है क्योंकि बहुत सावधान रहने पर भी मैं जैसा चाहता था वैसा सरल और सुबोध इसको न बना सका।'' लेखक की अपनी स्वीकारोक्ति को दृष्टिगत करते हुए कहा जा सकता है कि रेणु और स्वयं लेखक भाषिक संवेदना से इतने तो दूर नहीं है जिससे हम दोनों के बीच में भेद रेखा स्पष्ट करें।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध आलेख में शोध की विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक एवं समीक्षात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

Copyright @ 2021 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-10 No.01 October 2021

निष्कर्ष :

हिन्दी के आंचलिक उपन्यास कहें या आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यास कहें किन्तु इस प्रकार के उपन्यासों में कुल मिलकार तीन कोटि की भाषा दृष्टिगत होती है। एक छोर पर है 'जंगल के फूल' उपन्यास के लेखक राजेन्द्र अवस्थी तथा दूसरे छोर पर हैं फणीश्वर नाथ 'रेणु' एवं शैलेश मटियानी तथा इनके बीच में हैं शिवपूजन सहाय, रामदरथ मिश्र और नागार्जुन। यह वर्गीकरण भाषा प्रयोग की प्रवृत्ति के आधार पर है। सभी उपन्यासकारों का वैशिष्ट्य अलग–अलग है। प्रस्तुत तीन कोटि के उपन्यासों का अलग–अलग भाषिक अध्ययन करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि आंचलिक एवं आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यासों के बीच भाषायी भेद क्या है।नागार्जुन के उपन्यासों में 'रेणु' जैसी कलात्मकता नहीं है, वहाँ या तो सपाट बयानी है या फिर अपनी प्रतिबद्धता का इजहार। कथाशिल्प प्रेमचंद की परम्परा के आसपास ही बैठता है। आँचलिक उपन्यासों की सी संशिलष्ट संरचना से वंचित होकर भी ये उपन्यास आंचिलक ही कहलाते हैं।

संदर्भ सूची :–

1. डॉ0 रामदरश मिश्र – हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, पृ0 180–90
2. डॉ0 आदर्श सक्सेना – हिन्दी के आँचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि, पृ0 136
3. डॉ आदर्श सक्सेना – हिन्दी के आँचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि, पृ0 130
4. वीरेन्द्र जैन – पर, पृ0 28
5. राजेन्द्र अवस्थी – जंगल के फूल, पृ0 12–13
6. रांगेय राघव – कब तक पुकारूँ, पृ0 40
7. राजेन्द्र अवस्थी– जंगल के फूल, पृ0 32

Copyright @ 2021 Author